



पाठ – नहीं होना बीमार

शब्दार्थ -

- **वार्ड** :- अस्पताल में रोगियों के लिए बना हुआ विशेष स्थान या कमरा
- **सिरहाने** :- सिर की तरफ़, जहाँ सिर रखा जाता है
- **माहौल** :- वातावरण
- **शोरगुल** :- बहुत ज़्यादा शोर
- **अभिवादन** :- नमस्कार या सम्मान प्रकट करना
- **ठाठ** :- शान, मौज-मस्ती
- **अनुमान** :- अंदाज़ा लगाना
- **झपकी** :- थोड़ी देर के लिए नींद आना
- **कराहना** :- दर्द से धीमी आवाज़ निकालना
- **नब्ज़** :- नाड़ी, जिससे हृदय की धड़कन का पता चलता है
- **काढ़ा** :- जड़ी-बूटियों को उबालकर बनाया गया पेय
- **चहल-पहल** :- रौनक, लोगों का आना-जाना
- **ऊब** :- बोरियत
- **आहट** :- हल्का शब्द या आवाज़
- **विकार** :- शरीर का दोष या बीमारी
- **उपवास** :- व्रत, जिसमें कुछ समय के लिए भोजन नहीं किया जाता
- **झख मारना** :- (मुहावरा) मजबूर होकर या बेमन से कोई काम करना, समय बर्बाद करना
- **रुआँसा** :- रोने जैसी सूरत बनाना
- **दबे पाँव** :- बिना आवाज़ किए, चुपके से
- **बघार** :- दाल या सब्ज़ी में घी या तेल में जीरा, हींग आदि डालकर लगाया जाने वाला छौंक
- **कुढ़न** :- चिढ़, मन ही मन में गुस्सा होना
- **भुक्कड़** :- जिसे हर समय भूख लगती हो, बहुत खाने वाला

पाठ से

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सही उत्तर कौन – सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

प्रश्न 1. बच्चे के विद्यालय न जाने का मुख्य कारण क्या था?

- उसका विद्यालय जाने का मन नहीं था।
- उसका साबूदाने की खीर खाने का मन था।
- उसने गृहकार्य नहीं किया था।
- उसे बुखार हो गया था।

उत्तर :-





- उसका विद्यालय जाने का मन नहीं था।
- उसके गृहकार्य नहीं किया था।

प्रश्न 2. कहानी के अंत में बच्चे ने कहा, “इसके बाद स्कूल से छुट्टी मारने के लिए मैंने बीमारी का बहाना कभी नहीं बनाया।” बच्चे ने यह निर्णय लिया क्योंकि-

- घर में रहने के बजाय विद्यालय जाना अधिक रोचक है।
- बीमारी का बहाना बनाने से साबूदाने की खीर नहीं मिलती।
- झूठ बोलने से झूठ के खुलने का डर हमेशा बना रहता है।
- इस बहाने के कारण उसे दिनभर अकेले और भूखे रहना पड़ा।

उत्तर: -

- इस बहाने के कारण उसे दिनभर अकेले और भूखे रहना पड़ा।

प्रश्न 3. “लेटे-लेटे पीठ दुखने लगी” इस बात से बच्चे के बारे में क्या पता चलता है?

- उसे बिस्तर पर लेटे रहने के कारण ऊब हो गई थी।
- उसे अपनी बीमारी की कोई चिंता नहीं रह गई थी।
- वह बिस्तर पर आराम करने का आनंद ले रहा था।
- बीमारी के कारण उसकी पीठ में दर्द हो रहा था।

उत्तर: -

- उसे बिस्तर पर लेटे रहने के कारण ऊब हो गई थी।

प्रश्न 4. “क्या ठाठ हैं बीमारों के भी!” बच्चे के मन में यह बात आई क्योंकि-

- बीमार व्यक्ति को बहुत आराम करने को मिलता है।
- बीमार व्यक्ति को अच्छे खाने का आनंद मिलता है।
- बीमार व्यक्ति को विद्यालय नहीं जाना पड़ता है।
- बीमार व्यक्ति अस्पताल में शांति से लेटा रहता है।

उत्तर: -

- बीमार व्यक्ति को अच्छे खाने का आनंद मिलता है।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

(विद्यार्थी अपने मित्रों के साथ चर्चा करके बताएँगे कि उनके द्वारा विकल्प चुनने के क्या कारण हैं।)

उत्तर: -

1. मेरे द्वारा इस प्रश्न के दो विकल्पों का चयन करने का कारण यह है कि पाठ में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि एक दिन बच्चे का स्कूल जाने का मन नहीं किया, साथ ही उसने होमवर्क भी नहीं किया था। स्कूल जाता तो सजा मिलती। वह सजा से बचना चाहता था, इसलिए उसका स्कूल जाने का मन नहीं हुआ।





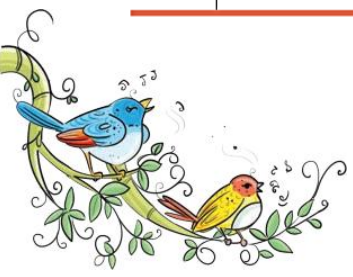
- मेरे द्वारा इस विकल्प का चयन करने का कारण यह है कि बच्चे ने जो प्राप्त करने के लिए स्कूल न जाने का बहाना बनाया वह कामयाब नहीं हुआ, अपितु इसके विपरीत उसे दिनभर भूखा और अकेला रहना पड़ा।
- मेरे द्वारा इस विकल्प का चयन करने का कारण यह है कि बच्चा बीमार नहीं था इसलिए उसे आराम की आवश्यकता भी नहीं थी, अतः वह लेटे-लेटे बुरी तरह उकता गया। साथ ही उस पर अनेक पाबंदियाँ लगा दी गईं। किसी स्वस्थ व्यक्ति को यदि बीमारों की तरह लेटे रहने के लिए कहा जाए तो उसका उकताहट का अंदाजा लगाया जा सकता है।
- मेरे द्वारा इस विकल्प का चुनाव इसलिए किया गया क्योंकि अस्पताल में काका को खीर खाते देखकर ही बच्चे मन में यह विचार आया था कि बीमार व्यक्ति को अच्छा खाना-खाने का आनंद मिलता है।

मिलकर करें मिलान

• पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही अर्थों से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने परिजनों और शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

उत्तर: -

शब्द	अर्थ
1. साबूदाना	1. किसी विशिष्ट कार्य के लिए घेरकर बनाया हुआ स्थान।
2. वार्ड	2. एक प्रकार का जाड़े का ओढ़ना जिसका कपड़ा दोहरा होता है और जिसमें रूई भरी होती है।
3. नर्स	3. शरीर का तापमान (जैसे बुखार) नापने का एक छोटा यंत्र।
4. रजाई	4. कई तरह की जड़ी-बूटियों और औषधियों को उबालकर उनके रस से बना पेय होता है। इसे सर्दी-जुकाम, खाँसी-बुखार और पाचन से जुड़ी समस्याओं में लाभदायक माना जाता है।
5. थर्मामीटर	5. रेशमी, ऊनी, मलमल जैसे नाजुक कपड़ों को पानी, साबुन और डिटरजेंट के बिना मशीनों से साफ करने वाला व्यक्ति।
6. काढ़ा	6. उत्तर प्रदेश के आगरा शहर में स्थित 17वीं सदी में निर्मित एक विश्व-प्रसिद्ध स्मारक जो सफेद संगमरमर से बना है।
7. ड्राइक्लीनर	7. एक दाल जिसे तुअर भी कहते हैं।
8. ताजमहल	8. सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा, सागूदाना, यह पहले आटे के रूप में होता है और फिर कूटकर दानों के रूप में सुखा लिया जाता है।
9. अरहर	9. वह व्यक्ति जो रोगियों, घायलों या वृद्धों आदि की देखभाल करे।





पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए-

(क) “मैंने सोचा बीमार पड़ने के लिए आज का दिन बिल्कुल ठीक रहेगा। चलो बीमार पड़ जाते हैं।”

उत्तर: -

एक बच्चा अस्पताल जाता है। वहाँ की साफ-सफाई और देखभाल देखकर उसे अच्छा लगता है। लेकिन सबसे ज्यादा उसे यह अच्छा लगता है कि मरीजों को **साबूदाने की खीर** खिलाई जाती है। वह भी खीर खाना चाहता है। उसे लगता है कि खीर खाने के लिए बीमार होना जरूरी है। एक दिन वह होमवर्क नहीं करता और पिटाई के डर से स्कूल जाने का मन नहीं करता। तब वह सोचता है कि आज बीमार पड़ना सही रहेगा, क्योंकि बीमार होने पर उसे आराम मिलेगा, सब उसका खयाल रखेंगे और खीर भी खाने को मिलेगी।

(ख) “देखो! उन्होंने एक बार भी आकर नहीं पूछा कि तू क्या खाएगा? पूछते तो मैं साबूदाने की खीर ही तो माँगता। कोई ताजमहल तो नहीं माँग लेता। लेकिन नहीं! इससे सारे विकार निकल जाएँगे। विकार निकल जाएँ बस। चाहे इस चक्कर में तुम खुद शिकार हो जाओ।”

उत्तर: -

बच्चा जब बीमार होने का बहाना करता है, तो उसकी चाल सफल नहीं हो पाती। इससे वह चिढ़ जाता है और अपने आप पर गुस्सा करने लगता है। वह किसी से कुछ कह भी नहीं सकता, क्योंकि डर है कि उसका झूठ सबके सामने आ जाएगा। उसे सब पर गुस्सा आता है और वह मन-ही-मन चिढ़ और गुस्से से भर जाता है। जब उसे खाने के लिए नहीं पूछा जाता, तो उसे आश्चर्य और दुख होता है। इस बात का उसे मलाल भी रहता है। इसी कारण उसके मन में तरह-तरह के बुरे विचार आने लगते हैं। अब उसे किसी की कोई बात अच्छी नहीं लगती, लेकिन वह अपना गुस्सा किसी पर भी नहीं निकाल पाता। इसलिए सब कुछ उसके मन के अंदर ही चलता रहता है।

सोच-विचार के लिए

पाठ को एक बार फिर ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए-

(क) अस्पताल में बच्चे को कौन-कौन सी चीजें अच्छी लगीं और क्यों?

उत्तर: -

अस्पताल के वार्ड में एक सीध में रखे पलंग, उन पर लाल कंबल और सफेद साफ चादरें, खिड़कियाँ, हरे पर्दे और चमकता हुआ फर्श बच्चे को बहुत अच्छे लगते हैं। खिड़कियों के पास हरे-भरे पेड़ झूम रहे होते हैं। वहाँ का शांत और साफ वातावरण भी उसे अच्छा लगता है। यह सब उसके लिए नया था, क्योंकि उसने पहली बार कोई अस्पताल देखा था। इसलिए उसका मन वहाँ देखकर खुश हो जाता है।

(ख) कहानी के अंत में बच्चे को महसूस हुआ कि उसे स्कूल जाना चाहिए था। क्या आपको लगता है उसका निर्णय सही था? क्यों?





उत्तर: -

बच्चे का निर्णय सही था क्योंकि वह स्कूल जाता तो रोज की तरह अपनी रोचक दिनचर्या व्यतीत करता और उसे व्यर्थ का कष्ट, क्षोभ, भूख और अकेलापन नहीं सहना पड़ता।

(ग) जब बच्चा बीमार पड़ने का बहाना बनाकर बिस्तर पर लेटा रहा तो उसके मन में कौन-कौन से भाव आ रहे थे? (संकेत- मन में उत्पन्न होने वाले विकार या विचार को भाव कहते हैं, उदाहरण के लिए क्रोध, दुख, भय, करुणा, प्रेम आदि।)

उत्तर: -

जब बच्चा बीमार होने का बहाना करके बिस्तर पर लेट गया, तो उसने सोचा कि नाना-नानी उसे बीमार मानकर उसका ज्यादा ध्यान रखेंगे। वे उसे पसंद का खाना देंगे और बहुत प्यार करेंगे। वह सोच रहा था कि आराम से लेटे-लेटे साबूदाने की खीर खाएगा। लेकिन जब ऐसा कुछ नहीं हुआ, तो वह परेशान हो गया। किसी ने खाने के लिए नहीं पूछा, तो उसे परिवार पर मन-ही-मन गुस्सा आया। वह दुखी हो गया और चिढ़चिढ़ा महसूस करने लगा। जलन, गुस्से और खीझ से उसका मन बेचैन हो उठा।

(घ) कहानी में बच्चे ने सोचा था कि “ठाठ से साफ-सुथरे बिस्तर पर लेटे रहो और साबूदाने की खीर खाते रहो।” आपको क्या लगता है, असल में बीमार हो जाने और इस बच्चे की सोच में कौन-कौन सी समानताएँ और अंतर होंगे?

(संकेत – आप अपने अनुभवों के आधार पर इस प्रश्न पर विचार कर सकते हैं कि कहानी वाले बच्चे की कल्पना वास्तविकता से कितनी अलग है।)

उत्तर: -

असल में बीमार होने और बच्चे की सोच में बहुत फर्क है। जब कोई सचमुच बीमार होता है, तो उसे बहुत तकलीफ़ होती है और वह चाहकर भी बिस्तर से नहीं उठ पाता। उसे अपनी रोज़ की दिनचर्या छोड़कर पूरे दिन दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। बीमार व्यक्ति को कुछ भी अच्छा नहीं लगता। चाहे कितना भी स्वादिष्ट खाना क्यों न हो, बीमार रहते हुए उसका स्वाद नहीं आता जैसा कि स्वस्थ रहने पर आता है। लेकिन कहानी वाले बच्चे की कल्पना हकीकत से बिल्कुल अलग है।

(ङ) नानीजी और नानाजी ने बच्चे को बीमारी की दवा दी और उसे आराम करने को कहा। बच्चे को खाना नहीं दिया गया। क्या आपको लगता है कि उन्होंने सही किया? आपको ऐसा क्यों लगता है?

उत्तर: -

नानाजी और नानीजी ने अपने अनुभव के आधार पर जिस प्रकार की बीमारी का अंदाज़ लगाया उसके अनुसार उन्होंने उसे दवा दी और खाना नहीं दिया, अपने विचार से उन्होंने ठीक किया क्योंकि अनेक छोटी-मोटी बीमारियाँ ऐसी होती हैं, जिन्हें उपवास रखकर ठीक किया जा सकता है।





अनुमान और कल्पना से

(क) कहानी के अंत में बच्चा नानाजी और नानीजी को सब कुछ सच – सच बताने का निर्णय कर लेता तो कहानी में आगे क्या होता?

(संकेत- उसका दिन कैसे बदल जाता? उसकी सोच और अनुभव कैसे होते?)

उत्तर: -

अगर बच्चा नाना-नानी को सच्चाई बता देता, तो हो सकता है उसे थोड़ी डाँट पड़ती। लेकिन तब उसे दिनभर भूखा और अकेला नहीं रहना पड़ता। जिस दुख, गुस्से और चिढ़ का उसे सामना करना पड़ा, वह सब नहीं होता। शायद नानी बिना बीमार पड़े ही उसके लिए साबूदाने की खीर बना देतीं। उस दिन का अनुभव उसके लिए एक सबक बन जाता और वह भविष्य में कभी भी आराम करने या खीर खाने के लिए ऐसे बहाने न बनाने का वादा करता। तब यह अनुभव उसके लिए एक अच्छी याद बन जाता।

(ख) कहानी में बच्चे की नानीजी के स्थान पर आप हैं। आप सारे नाटक को समझ गए हैं लेकिन चाहते हैं कि बच्चा सारी बात आपको स्वयं बता दे। अब आप क्या करेंगे?

(संकेत – इस सवाल में आपको नानाजी की जगह लेकर सोचना है और एक मनोरंजक योजना बनानी है जिससे बच्चा आपको स्वयं बातें बता दे।)

उत्तर: -

अगर मैं बच्चे की नानी के स्थान पर होता और बच्चे के स्कूल न जाने के बहाने को समझ जाता तो मैं उस दिन घर में साबूदाने की खीर सबके लिए बनाता, इस प्रकार बच्चे को लगता कि बिना बीमार पड़े या बीमारी का नाटक किए बिना भी साबूदाने की खीर मिल सकती तो क्यों मैं ये नाटक करूँ, और वह स्वयं ही अपने नाटक के विषय में बताने के लिए प्रेरित होता।

(ग) कहानी में बच्चे के स्थान पर आप हैं और घर में अकेले हैं। अब आप ऊबने से बचने के लिए क्या – क्या करेंगे?

उत्तर: -

मैं घर में अकेले रहते हुए ऊब से बचने के लिए अपने खिलौनों से खेलूँगा, अपने छोटे हुए होमवर्क को करूँगा। अपने कमरे को साफ़ करने के साथ ही प्रत्येक वस्तु को यथास्थान रखूँगा, जिससे नानीजी मेरा काम देखकर खुश हो जाए।

(घ) कहानी के अंत में बच्चे को लगा कि उसे स्कूल जाना चाहिए था। कल्पना कीजिए, अगर वह स्कूल जाता तो उसका दिन कैसा होता? अगले दिन जब वह स्कूल गया होगा तो उसने क्या-क्या किया होगा ?

उत्तर: -

अगर बच्चा स्कूल जाता तो होमवर्क न करने के कारण उसे अध्यापक से डाँट तो पड़ती किंतु उसका शेष दिन अन्य दिनों की तरह ही उसकी मर्जी से बीतता। अगले दिन स्कूल जाने पर उसने वे सभी कार्य बड़े मन से किए होंगे, जिन्हें वह कल बिस्तर पर लेटकर ऊबते हुए याद कर रहा था और अपने स्कूल न जाने के निर्णय पर पछता रहा था।

(ड) कहानी में नानाजी ने बच्चे की बीमारी ठीक करने के लिए उसे दवाई दी और खाने के लिए कुछ नहीं दिया। अगर आप नानीजी या नानाजी की जगह होते तो क्या-क्या करते?





उत्तर: -

मैं बच्चे की बीमारी को समझने का प्रयास करता और तत्पश्चात उसे डॉक्टर के पास ले जाता। डॉक्टर की सलाह के अनुसार ही खाना, पानी, फल आदि देता। साथ ही बच्चे की मन की स्थिति को समझने की कोशिश करता। अगर मुझे लगता कि बच्चा झूठ बोल रहा है तो उसे किसी-न-किसी प्रकार सच बोलने के लिए प्रेरित करता।

कहानी की रचना

“अस्पताल का माहौल मुझे बहुत ही अच्छा लग रहा था। बड़ी-बड़ी खिड़कियों के पास हरे-हरे पेड़ झूम थे। न ट्रैफिक का शोरगुल, न धूल, न मच्छर-मक्खी...। सिर्फ लोगों के धीरे-धीरे बातचीत करने की धीमी-धीमी गुनगुना बाकी एकदम शांति।”

इन पंक्तियों पर ध्यान दीजिए। इन पंक्तियों में ऐसा लग रहा है मानो हमारी आँखों के सामने अस्पताल का चित्र-सा बन गया हो। लेखन में इसे ‘चित्रात्मक भाषा’ कहते हैं। अनेक लेखक अपनी रचना को रोचक और सरस बनाने के लिए उपयुक्त स्थानों पर अनेक वस्तुओं, कार्यों, स्थानों आदि का विस्तार से वर्णन करते हैं।

लेखक ने इस कहानी को सरस और रोचक बनाने के लिए और भी अनेक तरीकों का उपयोग किया है। उदाहरण के लिए, उन्होंने कहानी में ‘बच्चे द्वारा कल्पना करने का भी प्रयोग किया है (जब बच्चा अकेले लेटे-लेटे घर और बाहर के लोगों के बारे में सोच रहा है)। इस कहानी में ऐसी कई विशेषताएँ छिपी हैं।

(क) इस पाठ को एक बार फिर से पढ़िए और अपने समूह में मिलकर इस पाठ की अन्य विशेषताओं की सूची बनाइए। अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

उत्तर: -

1. बीमार लोगों की देखभाल करने के लिए समय निकालना और मिलने जाते समय उनके लिए पसंद की चीज ले जाना बच्चों के लिए प्रेरणा देता है।
2. इस पाठ को पढ़कर अस्पताल का शांत और साफ वातावरण तथा वहाँ काम करने वाले कर्मचारियों की अच्छी छवि मन में बनती है।
3. छोटे बच्चों के भोले विचार जानकर हँसी आती है, क्योंकि बच्चा बीमारी की तकलीफ को न समझकर सिर्फ साबूदाने की खीर खाने के लिए बीमार होना चाहता है। उदाहरण – “क्या मजे हैं बीमारी के भी। ठाठ से बिस्तर पर लेटे रहो और साबूदाने की खीर खाते रहो। काश! सुधाकर काका की जगह मैं होता! मैं कब बीमार पड़ूँगा?”
4. पहली बार अस्पताल देखने पर बच्चे के मन में कौतूहल और कई प्रश्न उठते हैं, जो कहानी को रोचक बनाए रखते हैं।
5. कहानी में बच्चे की चंचलता और उसकी गतिविधियाँ बहुत मजेदार लगती हैं।
6. जब बच्चा जबरदस्ती लेटता है, स्कूल की याद करता है, और अपने झूठ पर पछताता है — ये सब कहानी को और रोचक बनाते हैं।
7. बच्चे की झुंझलाहट भरी बातें उसके मन की हालत और घर के माहौल को साफ दिखाती हैं। उदाहरण – “वे सब खाना खा रहे हैं। किसी ने एक बार भी नहीं पूछा कि मैं क्या खाऊँगा। अगर पूछते तो मैं तो सिर्फ खीर ही माँगता। कोई ताजमहल तो नहीं माँग लेता। लेकिन नहीं, भूखा रहो!”





8. पूरी कहानी आसान भाषा में है। यह बच्चों का मनोरंजन भी करती है और उन्हें एक सबक भी देती है।
(ख) कहानी में से निम्नलिखित के लिए उदाहरण खोजकर लिखिए-

उत्तर: -

विशेष बिंदु	कहानी में से उदाहरण
1. बच्चे द्वारा पिछली बातों को याद किया जाना	कितना मजा आता जब रिसेस में ठेले पर जाकर नमक- मिर्च लगे अमरूद खाते कटर-कटर।
2. हास्य यानी हँसी-मजाक का उपयोग किया जाना	पूछते तो मैं साबूदाने की खीर ही तो माँगता। कोई ताजमहल तो नहीं माँग लेता। लेकिन नहीं। भूखे रहो !! इससे सारे विकार निकल जाएँगे।
3. बच्चे द्वारा सोचने के तरीके में बदलाव आना	क्या मुसीबत है! पड़े रहो ! आखिर अब तक कोई पड़ा रह सकता है? इससे तो स्कूल चला जाता तो ही ठीक रहता। सजा मिलती तो मिल जाती।
4. कहानी में किसी का किसी बात से अनजान होना	मन्नू एक बार भी मुझे देखने नहीं आया। आया भी होगा तो दबे पाँव आया होगा और मुझे सोता जान लौट गया होगा।
5. बच्चे द्वारा स्वयं से बातें किया जाना	देखो! उन्होंने एक बार भी आकर नहीं पूछा कि तू क्या खाएगा? पूछते तो मैं साबूदाने की खीर ही तो माँगता। कोई ताजमहल तो नहीं माँग लेता। लेकिन नहीं। भूखे रहो!!

समस्या और समाधान

कहानी को एक बार पुनः पढ़कर पता लगाइए-

(क) बच्चे के सामने क्या समस्या थी? उसने उस समस्या का क्या समाधान निकाला ?

उत्तर: -

बच्चे के सामने एक समस्या थी – वह बीमार नहीं था, लेकिन उसे साबूदाने की खीर बहुत खानी थी। उसे लगा कि खीर सिर्फ बीमार होने पर ही मिलेगी। इसलिए उसने सोचा कि अगर वह बीमार होने का नाटक करेगा, तो उसे भी साबूदाने की खीर खाने को मिल जाएगी।

(ख) नानीजी – नानाजी के सामने क्या समस्या थी? उन्होंने उस समस्या का क्या समाधान निकाला ?

उत्तर: -

नानीजी – नानाजी के सामने यह समस्या थी कि वे बच्चे की बीमारी का कोई कारण नहीं समझ पा रहे थे, अतः उन्होंने बच्चे की पेट संबंधी समस्या को ध्यान में रखते हुए कुछ घरेलू दवाइयाँ देकर समस्या का समाधान निकाला।

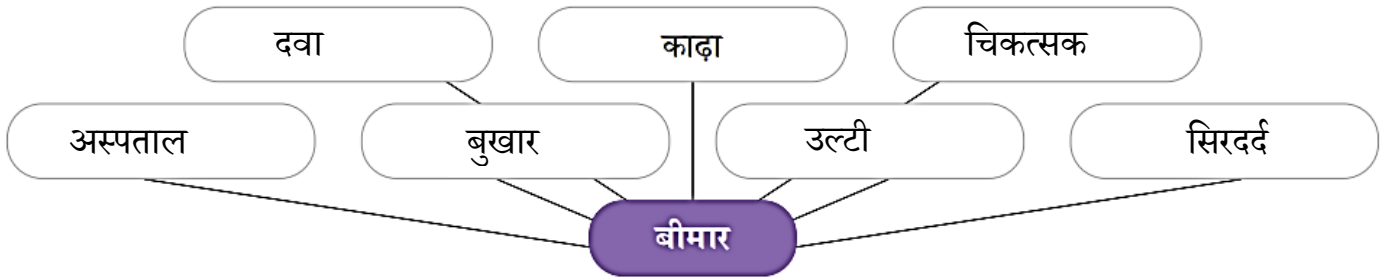




शब्द से जुड़े शब्द

• नीचे दिए गए स्थानों में 'बीमार' से जुड़े शब्द पाठ में से चुनकर लिखिए-

उत्तर: -



खोजबीन

कहानी में से वे वाक्य ढूँढ़कर लिखिए जिनसे पता चलता है कि-

(क) कहानी में सर्दी के मौसम की घटनाएँ बताई गई हैं।

उत्तर: -

1. मैं रजाई से बाहर ही नहीं निकला।
2. अस्पताल में लाल रंग के कंबल थे।
3. मैं रजाई में लेटे-लेटे घर में क्या हो रहा है, इसका अंदाज़ा लगाता रहा।
4. नानाजी ने रजाई हटाकर मेरा माथा छुआ।
5. रीसेस (भोजन के समय) में सब अमरूद खा रहे थे, कटर-कटर की आवाजें आ रही थीं। जब और सहन नहीं हुआ तो मैंने रजाई फेंकी और धीरे से दबे पाँव दरवाजे तक गया।
6. आम! इस मौसम में! जरूर बंबई वाले चाचाजी ने भेजे होंगे।

(ख) बच्चे को बहाना बनाने के परिणाम का आभास हो गया।

उत्तर: -

1. हे भगवान! यह तो बहुत बोरिंग हो गया। पूरा दिन कोई कैसे बिस्तर में लेटा रहे? और शाम को... क्या नाना मुझे बाहर जाने देंगे? सारे बच्चे आँगन में खेल रहे होंगे और मैं बिस्तर में पड़े-पड़े सोचता रहूँगा। सोचता हूँ, अक्लमंद! और बनो बीमार! और आज का होमवर्क! किससे कॉपी माँगूँगा? मैं बहुत उदास हो गया।
2. क्या मुसीबत है! बिस्तर पर पड़े-पड़े थक गया हूँ। आखिर कब तक कोई ऐसे लेटा रह सकता है? इससे तो स्कूल चला जाता, और सज़ा मिलती तो मिल जाती।

(ग) बच्चे को खाना-पीना बहुत प्रिय है।

उत्तर: -

1. क्या ठाठ हैं बीमारों के भी। मैंने सोचा ठाठ से साफ-सुथरे बिस्तर पर पड़े रहो और साबूदाने की खीर खाते रहो! काश! सुधाकर काका की जगह मैं होता ! मैं कब बीमार पहुँगा।





2. कितना मज़ा आता जब रीसेस में ठेले पर जाकर नमक मिर्च लगे अमरूद खाते कटर-कटर।
3. जरा आँख लगती तो खाने ही खाने की चीजें दिखाई पड़तीं। गरमागरम खस्ता कचौड़ी.... मावे की बर्फी.... बेसन की चिक्की....। गोलगप्पे और सबसे ऊपर साबूदाने की खीर! पता नहीं क्यों साबूदाने की खीर सिर्फ उपवास और बीमारी में ही बनाई जाती है। जैसे गुझिया सिर्फ होली-दिवाली और पंजीरी सिर्फ पूर्णिमा के दिन ही बनाई जाती है। क्यों? क्या ये चीजें जब इच्छा हो तब नहीं बनाई जा सकतीं। कोई मना करता है?
4. .. वो खाना खा रहे हैं। चबाने की आवाजें आ रही हैं। देखो! उन्होंने एक बार भी आकर नहीं पूछा कि तू क्या खाएगा? पूछते तो मैं साबूदाने की खीर ही तो माँगता।
5. आज क्या खाना बना होगा? खुशबू तो दाल-चावल की आ रही है। अरहर की दाल में हींग -जीरे का बघार और ऊपर से बारीक कटा हरा धनिया और आधा चम्मच देसी घी। फिर उसमें उन्होंने नीबू निचोड़ा होगा। थोड़ा-सा इस बीमार को भी दे दे कोई।
6. लेकिन खुशबू तो किसी और चीज की है। क्या हरी मिर्च तली गई है? उसे दाल-चावल में मसलकर खा रहे हैं। जब रहा नहीं गया तो मैं रजाई फेंककर खड़ा हो गया। दबे पाँव दरवाजे तक गया और चुपके से झाँककर देखा। हाँ, दाल-चावल, तली हुई हरी मिर्च।
7. लेकिन मुन्नु आम चूस रहा था। आम ! इस मौसम में ! जरूर मुंबई वाले चाचाजी ने भेजे होंगे।

(घ) बच्चे को स्कूल जाना अच्छा लगता है।

उत्तर: -

इससे तो स्कूल चला जाता तो ही ठीक रहता। सजा मिलती तो मिल जाती। कितना मजा आता जब रीसेस में ठेले पर जाकर नमक मिर्च लगे अमरूद खाते कटर-कटर।

शीर्षक

(क) आपने जो कहानी पढ़ी है, इसका नाम 'नहीं होना बीमार' है। अपने समूह में चर्चा करके लिखिए कि इस कहानी का यह नाम उपयुक्त है या नहीं। अपने उत्तर के कारण भी बताइए।

उत्तर: -

इस कहानी का शीर्षक / नाम उपयुक्त नहीं है, क्योंकि बच्चा इस कहानी में बीमार नहीं था। उसने बीमार होने का बहाना बनाया था।

(ख) यदि आपको इस कहानी को कोई अन्य नाम देना हो तो क्या नाम देंगे? आपने यह नाम क्यों सोचा, यह भी बताइए।

उत्तर: -

मैं इस कहानी को नाम देता – 'सबक'। यह नाम मैं इसलिए देता क्योंकि बीमारी का झूठा बहाना बनाने का क्या परिणाम होता है, इसका 'सबक' बच्चा सीख चुका था।





अभिनय

चेहरों पर मुस्कान, मुँह में पानी

(क) इस कहानी में अनेक रोचक घटनाएँ हैं जिन्हें पढ़कर चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। इस कहानी में किन बातों को पढ़कर आपके चेहरे पर भी मुस्कान आ गई थी? उन्हें रेखांकित कीजिए।

उत्तर: -

1. काश! मैं सुधाकर काका की जगह होता! मैं कब बीमार पड़ूँगा!
2. मैंने सोचा कि बीमार होने के लिए आज का दिन बिल्कुल ठीक रहेगा। चलो, आज बीमार हो जाते हैं।
3. नाना जी बोले, “आज इसे कुछ खाने को मत देना, आराम करने दो।”
4. थोड़ी नींद आती तो खाने की सारी चीजें सामने दिखाई देतीं।
5. सब खाना खा रहे हैं और चबाने की आवाजें आ रही हैं। देखो! उन्होंने एक बार भी नहीं पूछा कि मैं क्या खाऊँगा। अगर पूछते, तो मैं तो सिर्फ साबूदाने की खीर माँगता। कोई ताजमहल तो नहीं माँगता। लेकिन नहीं, भूखा रहो! इससे सारे बुरे विचार निकल जाएंगे। बुरे विचार निकल जाएँ बस, चाहे इसमें तुम खुद परेशान हो जाओ।
6. थोड़ी-सी दाल या कुछ भी इस बीमार को दे दो कोई।

(ख) इस कहानी में किन वाक्यों को पढ़कर आपके मुँह में पानी आ गया था? उन्हें रेखांकित कीजिए।

उत्तर: -

विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

कहानी "नहीं होना बीमार" में खाने-पीने की चीजों का वर्णन इतने रोचक ढंग से किया गया कि कई वाक्यों को पढ़कर मुँह में पानी आ जाता है। ऐसे ही कुछ वाक्य निम्नलिखित हैं:

- ...ठाठ से साफ-सुथरे बिस्तर पर लेटे रहो और साबूदाने की खीर खाते रहो!
- कितना मजा आता जब रिसस में ठेले पर जाकर नमक मिर्च लगे अमरूद खाते कटर-कटर।
- गरमागरम खस्ता कचौड़ी... मावे की बर्फी... बेसन की चिक्की... गोलगप्पे। और सबसे ऊपर साबूदाने की खीर !
- अरहर की दाल में हींग-जीरे का बघार और ऊपर से बारीक कटा हरा धनिया और आधा चम्मच देसी घी।
- फिर उसमें उन्होंने नीबू निचोड़ा होगा।
- ...दाल-चावल, तली हुई हरी मिर्ची।
- लेकिन मुन्नू आम चूस रहा था।

लेखन के अनोखे तरीके

• नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं। कहानी में ढूँढ़िए कि इन बातों को कैसे लिखा गया है-

1. ऐसा लगा मानो हमें देखकर सुधाकर काका खुश हो गए।
2. खिड़कियाँ बहुत बड़ी थीं और उनके बाहर हरे पेड़ हवा से हिल रहे थे।
3. वहाँ केवल लोगों के फुसफुसाने की आवाजें आ रही थीं।
4. फुसफुसाने की आवाजों के सिवा वहाँ कोई आवाज नहीं थी।





5. बीमार लोगों के बहुत मजे होते हैं।
6. मैं झूठमूठ बीमार पड़ जाता हूँ।

उत्तर: -

1. हमें देखकर सुधाकर काका जैसे खुश हो गए।
2. बड़ी-बड़ी खिड़कियों के पास हरे-हरे पेड़ झूम रहे थे।
3. सिर्फ लोगों के धीरे-धीरे बात करके की धीमी-धीमी गुनगुन।
4. बाकी एकदम शांति।
5. क्या ठाठ हैं बीमारों के भी।
6. मैंने सोचा बीमार पड़ने के लिए आज का दिन बिल्कुल ठीक रहेगा। चलो बीमार पड़ जाते हैं।

विराम चिह्न

देखें!” नानाजी ने रजाई हटाकर मेरा माथा छुआ। पेट देखा और नब्ज देखने लगे। इस बीच नानीजी भी आ गई। “क्या हुआ?””, नानीजी ने ‘पूछा।

पिछले पृष्ठ पर दिए गए वाक्यों को ध्यान से देखिए। इन वाक्यों में आपको कुछ शब्दों से पहले या बाद में कुछ चिह्न दिखाई दे रहे हैं। इन्हें विराम चिह्न कहते हैं।

अपने समूह के साथ मिलकर नीचे दिए गए विराम चिह्न को कहानी में ढूँढ़िए। ध्यानपूर्वक देखकर समझिए कि इनका प्रयोग वाक्यों में कहाँ-कहाँ किया जाता है। आपने जो पता किया, उसे नीचे लिखिए—

- अपने समूह के साथ मिलकर नीचे दिए गए विराम चिह्न को कहानी में ढूँढ़िए। ध्यानपूर्वक देखकर समझिए नहीं होना बीमार कि इनका प्रयोग वाक्यों में कहाँ-कहाँ किया जाता है। आपने जो पता किया, उसे नीचे लिखिए-

उत्तर: -

विराम चिह्न	कहाँ प्रयोग किया जाता है
पूर्ण विराम (।)	पूर्ण विराम का प्रयोग वाक्य के अंत में किया जाता है, जो वाक्य को पूरा करने और उसके अर्थ को स्पष्ट करने में मदद करता है।
अल्प विराम (,)	अल्पविराम का प्रयोग वाक्य में दो या दो से अधिक शब्दों, वाक्यांशों या उपवाक्यों को अलग करने के लिए किया जाता है। यह विराम चिह्न वाक्य के अर्थ को स्पष्ट करने और उसे अधिक पठनीय बनाने में मदद करता है।
प्रश्नवाचक चिह्न (?)	प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग प्रश्न वाक्यों के अंत में किया जाता है जो किसी जानकारी या स्पष्टीकरण की माँग करते हैं।





विस्मयादिबोधक चिह्न (!)	विस्मयादिबोधक का प्रयोग वाक्य में आश्चर्य, खुशी, दुख क्रोध आदि भावनाओं को व्यक्त करने के लिए वाक्य के अंत में किया जाता है।
उद्धरण चिह्न (“ ”)	उद्धरण चिह्न का प्रयोग किसी के कैसी होगी गली द्वारा कहे गए शब्दों या वाक्यों को ज्यों का त्यों उद्धृत (लिखने) करने के लिए किया जाता है।

कैसी होगी गली

“मुझे बड़ी तेज इच्छा हुई कि इसी समय बाहर निकलकर दिन की रोशनी में अपनी गली की चहल-पहल देखूँ” आपने कहानी में बच्चे के घर के साथ वाली गली के बारे में बहुत-सी बातें पढ़ी हैं। उन बातों और अपनी कल्पना के आधार पर उस गली का एक चित्र बनाइए।

उत्तर: -

विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) बच्चे ने अस्पताल के वातावरण का विस्तार से सुंदर वर्णन किया है। इसी प्रकार आप अपनी कक्षा का वर्णन कीजिए।

(ख) कहानी में बच्चे को घर में अकेले दिन भर लेटे रहना पड़ा था। क्या आप कभी कहीं अकेले रहे हैं? उस समय आपको कैसा लग रहा था? आपने क्या-क्या किया था?

(ग) कहानी में आम खाने वाले मुन्नू को देखकर बच्चे को ईर्ष्या हुई थी। क्या आपको कभी किसी से या किसी को आपसे ईर्ष्या हुई है? आपने तब क्या किया था ताकि यह भावना दूर हो जाए?

(घ) कहानी में नानाजी – नानीजी बच्चे का पूरा ध्यान रखने का प्रयास करते हैं। आपके घर और विद्यालय में आपका ध्यान कौन-कौन रखते हैं? कैसे?

(ङ) आप अपने परिजनों और मित्रों का ध्यान कैसे रखते हैं? क्या-क्या करते हैं या क्या-क्या नहीं करते हैं ताकि उन्हें कम-से-कम परेशानी हो ?

उत्तर: -

विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

बहाने

(क) कहानी में बच्चे ने बीमारी का बहाना बनाया ताकि उसे स्कूल न जाना पड़े। क्या आपने कभी किसी कारण से बहाना बनाया है? यदि हाँ, तो उसके बारे में बताइए। उस समय आपके मन में कौन-कौन से भाव आ-जा रहे थे? आप कैसा अनुभव कर रहे थे ?

उत्तर: -

विद्यार्थी स्वयं करें।





(क) अपनी कक्षा का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

मेरी कक्षा बहुत अच्छी और हवादार है। इसमें एक बड़ा व्हाइटबोर्ड, बहुत सारी मेजें और कुर्सियाँ हैं। दीवारों पर सुंदर चार्ट और नक्शे लगे हैं। हम सब दोस्त मिलकर पढ़ते और खेलते हैं। हमारी टीचर हमें बहुत प्यार से पढ़ाती हैं। मुझे अपनी कक्षा बहुत पसंद है।

(ख) क्या आप कभी अकेले रहे हैं? आपको कैसा लगा और आपने क्या किया?

उत्तर:

हाँ, एक बार मैं घर पर थोड़ी देर के लिए अकेला था। शुरू में तो अच्छा लगा, पर बाद में थोड़ा डर लगने लगा। तब मैंने टीवी पर अपना पसंदीदा कार्टून देखा और एक कहानी की किताब पढ़ी। जब मम्मी-पापा वापस आए, तो मुझे बहुत खुशी हुई।

(ग) क्या आपको कभी किसी से ईर्ष्या हुई है? आपने तब क्या किया?

उत्तर:

हाँ, एक बार मुझे अपने दोस्त की नई साइकिल देखकर ईर्ष्या हुई थी। तब मेरी माँ ने समझाया कि हमें दूसरों की खुशी में खुश होना चाहिए। मैं अपने दोस्त के पास गया, उसे बधाई दी और उसके साथ खेला। ऐसा करने से मेरे मन को बहुत शांति मिली।

(घ) आपके घर और स्कूल में आपका ध्यान कौन-कौन रखते हैं?

उत्तर:

- **घर पर:** मेरे मम्मी-पापा मेरा पूरा ध्यान रखते हैं। वे मुझे खाना देते हैं, पढ़ाई में मदद करते हैं और मुझसे बहुत प्यार करते हैं।
- **स्कूल में:** मेरी टीचर और मेरे दोस्त मेरा ध्यान रखते हैं। टीचर हमें अच्छे से पढ़ाती हैं और दोस्त खेलने और पढ़ाई में मेरी मदद करते हैं।

(ङ) आप अपने परिवार और मित्रों का ध्यान कैसे रखते हैं?

उत्तर:

- **परिवार का:** मैं अपने मम्मी-पापा की बात मानता हूँ, अपना कमरा साफ रखता हूँ और उनके कामों में मदद करता हूँ।
- **दोस्तों का:** मैं दोस्तों के साथ अपनी चीजें बाँटता हूँ, उनकी पढ़ाई में मदद करता हूँ और उनसे कभी झगड़ा नहीं करता।





(ख) आमतौर पर बनाए जाने वाले बहानों की एक सूची बनाइए।

उत्तर: -

पेट दर्द, सिर दर्द, बुखार, किसी का जन्मदिन, माँ की सहायता के लिए रुकना, छोटे भाई का स्वस्थ खराब होना दादाजी के साथ अस्पताल जाना, बुआ, मौसी आदि का घर पर आना।

(ग) बहाने क्यों बनाने पड़ते हैं? बहाने न बनाने पड़ें, इसके लिए हम क्या – क्या कर सकते हैं?

उत्तर: -

कई बार कुछ कार्य करने की हमारे इच्छा नहीं होती किंतु हम स्पष्ट बताने में डरते हैं या संकोच करते हैं इसलिए बहाने बनाने पड़ते हैं।

हमें बहाने न बनाने पड़ें इसके लिए संकोच और डर को छोड़कर थोड़ी हिम्मत जुटाकर सच बोलने की कोशिश करनी चाहिए।

अनुमान

“मैं रजाई में पड़ा-पड़ा घर में चल रही गतिविधियों का अनुमान लगाता रहा।”

कहानी में बच्चे ने अनेक प्रकार के अनुमान लगाए हैं। क्या आपने कभी किसी अनदेखे व्यक्ति / वस्तु / पशु – पक्षी/स्थान आदि के विषय में अनुमान लगाए हैं? किसके बारे में? क्या? कब? विस्तार से बताइए।

(संकेत – जैसे पेड़ से आने वाली आवाज सुनकर किसी प्राणी का अनुमान लगाना; कहीं दूर रहने वाले किसी संबंधी/रिश्तेदार के विषय में सुनकर उसके संबंध में अनुमान लगाना।)

उत्तर: -

विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

हाँ, मुझे अच्छी तरह याद है, मैंने अपने एक अनदेखे रिश्तेदार के बारे में बहुत से अनुमान लगाए थे। यह अनुमान मैंने अपने चचेरे भाई रोहन के बारे में लगाया था, जो अपने माता-पिता (मेरे चाचा-चाची) के साथ अमेरिका में रहता है। यह लगभग दो साल पहले की बात है। तब मुझे पता चला कि चाचाजी का पूरा परिवार हमारे ताऊजी की बेटी की शादी में शामिल होने के लिए भारत आ रहा है। मैंने रोहन को सिर्फ तस्वीरों में देखा था और पापा से उसके बारे में कहानियाँ सुनी थीं। जैसे ही मैंने उनके आने की खबर सुनी, मेरा मन उसके बारे में तरह-तरह के अनुमान लगाने लगा।

क्या-क्या अनुमान लगाए?

मैं अक्सर खाली समय में लेटकर या बैठे-बैठे रोहन के बारे में सोचने लगता था। मेरे अनुमान कुछ इस तरह के थे:

1. **उसकी बोली और भाषा को लेकर अनुमान:** मैं सोचता था कि वह सिर्फ अंग्रेजी में ही बात करता होगा। अगर वह हिंदी बोलेगा भी, तो उसका लहजा (accent) बहुत अजीब और मजेदार होगा, जैसा हम फिल्मों में सुनते हैं। मैं मन ही मन यह सोचकर हँसता था कि जब मैं उससे बात करूँगा तो हम एक-दूसरे की बातें कैसे समझेंगे।
2. **उसके स्वभाव को लेकर अनुमान:** तस्वीरों में वह हमेशा शांत दिखता था, तो मुझे लगता था कि वह बहुत शर्मीला होगा और मुझसे ज्यादा बात नहीं करेगा। मैं यह भी सोचता था कि अमेरिका में रहने के कारण वह थोड़ा घमंडी हो सकता है और शायद उसे यहाँ के तौर-तरीके पसंद न आएँ।





3. **उसकी पसंद-नापसंद को लेकर अनुमान:** मैं अनुमान लगाता था कि उसे केवल बर्गर, पिज्जा और वीडियो गेम ही पसंद होंगे। मैंने सोचा, "क्या वह मेरे जैसा क्रिकेट खेलना पसंद करेगा या उसे बेसबॉल जैसे विदेशी खेल ही अच्छे लगते होंगे? क्या वह हमारे घर का बना दाल-चावल खाएगा?"
4. **उसके रहन-सहन को लेकर अनुमान:** मैं कल्पना करता था कि उसका जीवन बहुत अलग होगा। उसका स्कूल फिल्मों में दिखाए जाने वाले स्कूलों जैसा बड़ा और सुंदर होगा। उसके बहुत सारे दोस्त होंगे जिनके साथ वह रोज बाहर घूमने जाता होगा।

जब अनुमान सच से टकराया

आखिरकार वह दिन आया जब चाचाजी का परिवार घर पहुँचा। मैं दरवाजे के पीछे छिपकर रोहन को देख रहा था। लेकिन जब वह सबसे मिला, तो मेरे सारे अनुमान एक-एक करके टूटने लगे।

- वह टूटी-फूटी ही सही, पर बहुत प्यारी हिंदी बोल रहा था और सबसे हाथ जोड़कर नमस्ते कर रहा था।
- वह बिल्कुल भी शर्मीला या घमंडी नहीं था, बल्कि बहुत मिलनसार था। उसने खुद आकर मुझसे हाथ मिलाया और मुस्कुराकर बात की।
- सबसे मजेदार बात यह हुई कि खाने की मेज पर उसने सबसे ज्यादा चाव से आलू के परांठे खाए और शाम को मेरे साथ क्रिकेट खेलने के लिए सबसे ज्यादा उत्साहित वही था।

उस दिन मुझे समझ आया कि हमें किसी के बारे में सिर्फ सुनकर या दूर से जानकर कोई पक्की राय नहीं बनानी चाहिए। असलियत अक्सर हमारी कल्पना से बहुत अलग और बेहतर हो सकती है। हम दोनों उस शादी में बहुत अच्छे दोस्त बन गए और आज भी वीडियो कॉल पर बातें करते हैं।

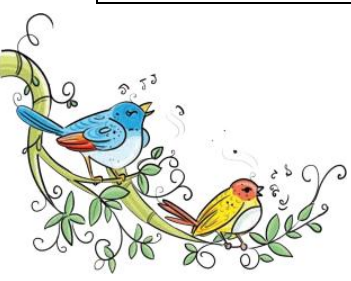
घर का सामान

“बहुत ढूँढ़ा गया पर थर्मामीटर मिला ही नहीं। शायद कोई माँगकर ले गया था।”

- कहानी में बच्चे के घर पर थर्मामीटर (तापमापी) खोजने पर वह मिल नहीं पाता। आमतौर पर हमारे घरों में कोई न कोई ऐसी वस्तु होती है जिसे खोजने पर भी वह नहीं मिलती, जिसे कोई माँगकर ले जाता है या हम जिसे किसी से माँगकर ले आते हैं। अपने घर को ध्यान में रखते हुए ऐसी वस्तुओं की सूची बनाइए –

उत्तर: -

जो खोजने पर भी नहीं मिलती हैं	जो कोई माँगकर ले जाते हैं	जो आप किसी से माँगकर लाते हैं
कैंची	पलास	फूल
रबर	खुरपी	बीज
बोटल	सीढ़ी	मिट्टी
रूमाल	कुर्सियाँ	गुड़िया बनाने का साँचा





खान-पान और आप

विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

(क) कहानी में सुधाकर काका को बीमार होने पर साबूदाने की खीर दी गई थी। आपके घर में किसी के बीमार होने पर उसे क्या-क्या खिलाया जाता है?

उत्तर: हमारे घर में किसी के बीमार होने पर उसे हल्का और आसानी से पचने वाला भोजन दिया जाता है, जैसे:

- मूंग दाल की खिचड़ी
- दलिया
- सब्जियों का सूप
- साबूदाने की खीर

यह भोजन शरीर को ताकत देता है और जल्दी ठीक होने में मदद करता है।

(ख) कहानी में बच्चे को बहुत-सी चीजें खाने का मन है। आपका क्या-क्या खाने का बहुत मन करता है?

उत्तर: कहानी के बच्चे की तरह मेरा भी बहुत-सी चीजें खाने का मन करता है। मुझे पिज्जा, बर्गर, गोलगप्पे, छोले-भटूरे और चॉकलेट केक खाना बहुत पसंद है। लेकिन मुझे सबसे ज्यादा अपनी माँ के हाथ का बना गरमा-गरम हलवा अच्छा लगता है।

(ग) कहानी में बच्चा सोचता है कि साबूदाने की खीर सिर्फ बीमारी या उपवास में क्यों मिलती है। आपके घर में ऐसा क्या-क्या है, जो केवल विशेष अवसरों या त्योहारों पर ही बनता है?

उत्तर: हाँ, हमारे घर में भी कुछ चीजें हैं जो केवल त्योहारों या खास मौकों पर ही बनती हैं। जैसे:

- गुजिया: यह होली के त्योहार पर बनती है।
- गाजर का हलवा: यह अक्सर सर्दियों में या दिवाली पर बनता है।
- खीर और पूड़ी: यह किसी जन्मदिन या पूजा के अवसर पर बनती है।
- दही-वड़े: यह भी ज्यादातर त्योहारों पर ही बनते हैं।

(घ) कहानी में बच्चा सोचता है कि अगर वह स्कूल जाता तो उसे ठेले पर नमक-मिर्च वाले अमरूद खाने को मिलते। आप अपने विद्यालय में क्या-क्या खाते-पीते हैं? विद्यालय में आपका रुचिकर भोजन क्या है?

उत्तर: मैं अपने विद्यालय में ज्यादातर घर से लाया हुआ टिफिन ही खाता हूँ, जिसमें पराठा, सैंडविच या पोहा होता है। कभी-कभी मैं विद्यालय की कैंटीन से समोसा या जूस भी लेता हूँ। विद्यालय में मेरा सबसे पसंदीदा भोजन समोसा है, जिसे दोस्तों के साथ मिलकर खाने में बहुत मजा आता है।

(ङ) इस कहानी में भोजन से जुड़ी बच्चे की कई रोचक बातें बताई गई हैं। आपके बचपन की भोजन से जुड़ी कोई विशेष याद क्या है, जिसे आप अब भी याद करते हैं?

उत्तर: मेरे बचपन की सबसे प्यारी याद गर्मियों की छुट्टियों में नानी के घर जाने से जुड़ी है। नानी के घर के आँगन में आम का एक बड़ा पेड़ था। हम सब भाई-बहन मिलकर कच्चे आम तोड़ते थे और नानी उन आमों से बहुत स्वादिष्ट





चटनी और आम का पना बनाती थीं। आज भी जब मैं आम की चटनी खाता हूँ, तो मुझे अपनी नानी और बचपन के वो मजेदार दिन याद आ जाते हैं।

(च) कहानी में बच्चा भोजन की सुगंध से रजाई फेंककर रसोई में झाँकने लगा। क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है कि घर में किसी विशेष खाने की सुगंध से आप भी रसोई में जाकर तुरंत देखना चाहते हैं कि क्या पक रहा है? आपको किस-किस खाने की सुगंध सबसे अधिक पसंद है?

उत्तर: हाँ, मेरे साथ ऐसा कई बार हुआ है। खासकर जब बारिश के मौसम में माँ पकौड़े बनाती हैं, तो उसकी सुगंध पूरे घर में फैल जाती है और मैं खुद को रसोई में जाने से रोक नहीं पाता। मुझे इन खानों की सुगंध सबसे ज्यादा पसंद है:

- गरमा-गरम हलवे की सुगंध।
- बारिश में बनते हुए पकौड़ों की सुगंध।
- ताज़े बेक हुए केक की सुगंध।

आज की पहेली

• कहानी में आपने खाने-पीने की अनेक वस्तुओं के बारे में पढ़ा है। अब हम आपके सामने खाने-पीने की वस्तुओं या व्यंजनों से जुड़ी कुछ पहेलियाँ लाए हैं। इन्हें बूझिए और उत्तर लिखिए-

उत्तर: -

पहेली	उत्तर
1. रोटी जैसा होता है ये, पर आलू से भरा-भरा, घी-तेल साथी हैं इसके, दही चटनी से हरा-भरा	आलू का पराठा
2. दाल-चावल का मेल है यह तो, भारत भर में तुम इसे पाओ, दक्षिण में ये खूब है बनता, चटनी – सांभर संग-संग खाओ, गोल – तिकोना इसका आकार, गरम-गरम तुम इसे बनाओ, कौन-सा व्यंजन होता है यह, बोलो बोलो नाम बताओ।	मसाला डोसा
3. नाश्ते का यह बड़ा है खास, महाराष्ट्र में इसका वास, मिर्च-मसाले से भरपूर, संग बटाटा भी मशहूर चटपटी लगी किसे? बूझो नाम तो खाएँ इसे !	वड़ा पाव
4. बेसन से बने चौकोर या गोल, गुजरात में बड़ा है बोला। खाने में नर्म, पानी भरे, धनिया मिर्ची संग सजे।	ढोकला
5. गोल-गोल पानी से भरके, चटनी सोंठ संग इसे खाओ उत्तर-दक्षिण पूरब-पश्चिम, गली-मुहल्लों में भी पाओ। खट्टी-मीठी, तीखी हाय, खाना तो इसे हर कोई चाहे!	गोलगप्पे (पानी पूरी)
6. हरे साग संग मुझको पाओ, मक्खन के संग मुझको खाओ। आटा मेरा हल्का पीला, स्वाद मेरा है बड़ा रंगीला।	मुक्के की रोटी





7. आग में पकती हूँ, सोंधा-सा स्वाद, साथ में खाओ चूरमा बन जाए फिर बात, गरम दाल से मुझको प्यार, राजस्थान का मैं उपहार ।	बाटी
8. गोल-गोल और श्वेत रंग का रस से भरा हुआ हूँ खूब । मीठी दुनिया का महाराजा चाशनी मीठी डूब – डूब।	रसगुल्ला

egyanarchive

